

B.A. 5th Semester - Economics (Paper-2)

Paper Code: A080503

विषय: अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र (International Economics)

प्रश्न 1: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के तुलनात्मक लागत सिद्धांत (Comparative Cost Theory) की विस्तृत व्याख्या कीजिए और इसकी सीमाओं की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:

- परिचय:** डेविड रिकार्डो ने अपनी पुस्तक '*Principles of Political Economy and Taxation*' (1817) में तुलनात्मक लागत सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यह सिद्धांत एडम स्मिथ के निरपेक्ष लाभ सिद्धांत का विस्तार है।
- मूल सिद्धांत:** यदि एक देश दोनों वस्तुओं के उत्पादन में दूसरे देश की तुलना में अधिक कुशल (सस्ता) है, तब भी दोनों देशों के बीच व्यापार लाभदायक हो सकता है। प्रत्येक देश उस वस्तु का उत्पादन और निर्यात करेगा जिसमें उसकी तुलनात्मक श्रेष्ठता (Comparative Advantage) अधिक है, तथा उस वस्तु का आयात करेगा जिसमें उसकी तुलनात्मक हानि कम है।
- मान्यताएं:** $2 \times 2 \times 1$ मॉडल (2 देश, 2 वस्तुएं, 1 साधन-श्रम), श्रम का मूल्य सिद्धांत, पूर्ण रोजगार, शून्य परिवहन लागत, तथा स्वतंत्र व्यापार।
- काल्पनिक उदाहरण:**
 - पुर्तगाल: 1 इकाई वाइन = 80 श्रम घंटे, 1 इकाई कपड़ा = 90 श्रम घंटे।
 - इंग्लैंड: 1 इकाई वाइन = 120 श्रम घंटे, 1 इकाई कपड़ा = 100 श्रम घंटे।
 - पुर्तगाल दोनों वस्तुएं सस्ती बनाता है, परंतु उसे वाइन में अधिक तुलनात्मक लाभ ($\$80/120 = 0.66\$$) है और इंग्लैंड को कपड़े में कम हानि है। अतः पुर्तगाल वाइन और इंग्लैंड कपड़ा बेचेगा।
- सीमाएं:** केवल श्रम को उत्पादन साधन मानना गलत है; वास्तविक व्यापार में परिवहन लागत महत्वपूर्ण होती है; यह सिद्धांत स्थिर प्रतिफल की गलत धारणा पर आधारित है; तथा इसमें स्वतंत्र व्यापार मान लिया गया है जो व्यावहारिक नहीं है।

प्रश्न 2: हेक्शर-ओहलिन का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धांत (Heckscher-Ohlin Theory)

क्या है? यह रिकार्डो के सिद्धांत से किस प्रकार श्रेष्ठ है?

उत्तर:

1. **परिचय:** स्वीडिश अर्थशास्त्री एली हेक्चर और बर्टिल ओहलिन ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के 'आधुनिक सिद्धांत' (Modern Theory) या 'साधन-संपन्नता सिद्धांत' (Factor Endowment Theory) का प्रतिपादन किया।
2. **मूल विचार:** देशों के बीच व्यापार का मुख्य कारण उनकी **साधन प्रचुरता (Factor Abundance)** में अंतर होना है। श्रम-प्रचुर देश श्रम-गहन (Labour-Intensive) वस्तुओं का उत्पादन और निर्यात करते हैं, जबकि पूँजी-प्रचुर देश पूँजी-गहन (Capital-Intensive) वस्तुओं का निर्यात करते हैं।
3. **मान्यताएं:** 2×2 मॉडल (2 देश, 2 वस्तुएं, 2 साधन: श्रम व पूँजी), दोनों देशों में समान तकनीक, साधनों की पूर्ण गतिशीलता (देश के भीतर)।
4. **रिकार्डो के सिद्धांत से श्रेष्ठता:**
 - **बहु-साधन दृष्टिकोण:** रिकार्डो केवल श्रम पर निर्भर थे, जबकि ओहलिन श्रम और पूँजी दोनों को शामिल करते हैं।
 - **लागत अंतर का वास्तविक कारण:** रिकार्डो यह नहीं बता पाए कि तुलनात्मक लागत में अंतर क्यों होता है। ओहलिन ने स्पष्ट किया कि यह अंतर साधनों की उपलब्धता और उनकी कीमतों से पैदा होता है।
 - **सामान्य मूल्य सिद्धांत का एकीकरण:** इसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को अर्थशास्त्र के सामान्य मांग-पूर्ति सिद्धांत से जोड़ा।

प्रश्न 3: लियोन्टीफ विरोधाभास (Leontief Paradox) की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

1. **परिचय:** वासिली लियोन्टीफ ने 1953 में अमेरिका के विदेशी व्यापार के आंकड़ों पर इनपुट-आउटपुट (Input-Output) मॉडल लागू करके हेक्चर-ओहलिन सिद्धांत का व्यावहारिक परीक्षण किया।
2. **विरोधाभास:** हेक्चर-ओहलिन सिद्धांत के अनुसार अमेरिका (जो एक पूँजी-प्रचुर देश है) को पूँजी-गहन वस्तुओं का निर्यात और श्रम-गहन वस्तुओं का आयात करना चाहिए था। परंतु लियोन्टीफ ने पाया कि अमेरिका वास्तव में श्रम-गहन वस्तुओं का निर्यात और पूँजी-गहन वस्तुओं का आयात कर रहा था।
3. **विरोधाभास के मुख्य कारण:**
 - **मानवीय पूँजी (Human Capital):** अमेरिकी मजदूर अन्य देशों के मजदूरों की तुलना में अत्यधिक कुशल और प्रशिक्षित हैं।

- **तकनीकी श्रेष्ठता:** अमेरिकी निर्यात अनुसंधान और विकास (R&D) पर आधारित थे।
- **व्यापार नीति:** अमेरिका की प्रशुल्क नीति पूँजी-गहन उद्योगों को अधिक संरक्षण देती थी।

प्रश्न 4: हैबरलर के अवसर लागत सिद्धांत (Opportunity Cost Theory) का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

1. **परिचय:** गोटाफ्राइड हैबरलर ने 1936 में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अवसर लागत सिद्धांत प्रस्तुत किया। इन्होंने श्रम के मूल्य सिद्धांत को खारिज कर अवसर लागत की अवधारणा अपनाई।
2. **मूल सिद्धांत:** किसी वस्तु 'A' की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए वस्तु 'B' की जितनी मात्रा का त्याग करना पड़ता है, वही वस्तु 'A' की अवसर लागत है।
3. **तीन स्थितियां:**
 - **स्थिर अवसर लागत (Constant Opportunity Cost):** उत्पादन के साधनों की समरूपता।
 - **वर्धमान अवसर लागत (Increasing Opportunity Cost):** साधन विशिष्ट होते हैं; जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है, त्याग की मात्रा बढ़ती है। (यह सबसे व्यावहारिक स्थिति है)।
 - **हासमान अवसर लागत (Decreasing Opportunity Cost):** पैमाने की बचतें प्राप्त होना।
4. **मूल्यांकन:** हैबरलर का सिद्धांत रिकार्डो के सिद्धांत से बेहतर है क्योंकि यह श्रम के अलावा अन्य सभी उत्पादन साधनों को शामिल करता है।

प्रश्न 5: जे.एस. मिल के 'पारस्परिक मांग के सिद्धांत' (Theory of Reciprocal Demand) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

1. **परिचय:** जे.एस. मिल ने यह स्पष्ट करने के लिए पारस्परिक मांग के सिद्धांत का प्रतिपादन किया कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभ दो देशों के बीच किस प्रकार विभाजित होते हैं (अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय विनिमय दर कैसे तय होती है)।
2. **मूल विचार:** दो देशों के बीच विनिमय दर पारस्परिक मांग की लोच पर निर्भर करती है। 'पारस्परिक मांग' का अर्थ है एक देश द्वारा दूसरे देश की वस्तुओं के लिए अपनी वस्तुओं की मांग।

3. **व्यापार की शर्तों का निर्धारण:** विनिमय दर उन दो सीमाओं के बीच तय होगी जो दोनों देशों की घरेलू लागत अनुपातों द्वारा निर्धारित होती हैं। जिस देश की विदेशी वस्तु के लिए मांग जितनी अधिक लोचदार होगी, व्यापार की शर्तें उसके उतने ही अनुकूल होंगी।
4. **सीमाएं:** यह सिद्धांत केवल दो देशों और दो वस्तुओं की मान्यता पर आधारित है और इसमें परिवहन लागत को नजरअंदाज किया गया है।

प्रश्न 6: ऑफर वक्र (Offer Curves) क्या हैं? इसके द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संतुलन का निर्धारण कैसे होता है?

उत्तर:

1. **परिचय:** ऑफर वक्र का विकास मार्शल और ऐजवर्थ ने किया था। इसे 'पारस्परिक मांग वक्र' (Reciprocal Demand Curve) भी कहा जाता है।
2. **अर्थ:** एक ऑफर वक्र यह दर्शाता है कि एक देश किसी दूसरे देश की वस्तु की विभिन्न मात्राओं के बदले अपनी वस्तु की कितनी मात्रा देने (या निर्यात करने) को तैयार है।
3. **संतुलन का निर्धारण:** दो देशों का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संतुलन वहाँ स्थापित होता है जहाँ दोनों देशों के ऑफर वक्र एक-दूसरे को काटते हैं। उस कटान बिंदु पर:
 - दोनों देशों के आयात और निर्यात की मात्राएं आपस में बराबर होती हैं।
 - अंतर्राष्ट्रीय विनिमय दर (Terms of Trade Line) निर्धारित होती है।
4. **महत्व:** ऑफर वक्र के माध्यम से प्रशुल्क, परिवहन लागत और मांग में परिवर्तन के व्यापार की शर्तों पर पड़ने वाले प्रभावों को आसानी से समझा जा सकता है।

प्रश्न 7: व्यापार की शर्तों (Terms of Trade) का क्या अर्थ है? इसके प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** व्यापार की शर्तें (ToT) एक देश की निर्यात कीमतों और आयात कीमतों के बीच का अनुपात हैं। यह दर्शाती है कि निर्यात की एक इकाई के बदले आयात की कितनी इकाइयां प्राप्त होंगी ($\$ToT = P_x / P_m \times 100\%$)।

2. प्रमुख प्रकार:

- शुद्ध बारटर व्यापार शर्त (**Net Barter ToT**): $\$N = (P_x / P_m) \times 100\$$ (कीमतों का अनुपात)।
- सकल बारटर व्यापार शर्त (**Gross Barter ToT**): $\$G = (Q_m / Q_x) \times 100\$$ (आयात और निर्यात की भौतिक मात्रा का अनुपात)।
- आय व्यापार शर्त (**Income ToT**): $\$I = (P_x / P_m) \times Q_x\$$ (देश की कुल आयात क्षमता)।
- एक-साधनीय व्यापार शर्त (**Single Factorial ToT**): निर्यात क्षेत्र में साधन उत्पादकता में सुधार को शामिल करती है।

3. प्रभावित करने वाले कारक: घरेलू व विदेशी मांग की लोच, प्रशुल्क नीति, साधन उत्पादकता और आर्थिक विकास।

प्रश्न 8: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभ (Gains from Trade) का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर:

1. परिचय: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से भाग लेने वाले सभी देशों को आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं। इन लाभों को दो भागों में बांटा जा सकता है: प्रत्यक्ष लाभ और अप्रत्यक्ष लाभ।
2. प्रत्यक्ष (स्थैतिक) लाभ:
 - उत्पादन में वृद्धि: विशिष्टीकरण और तुलनात्मक लाभ के कारण विश्व का कुल उत्पादन बढ़ता है।
 - उपभोग स्तर में सुधार: देश उन वस्तुओं का उपभोग कर सकते हैं जिनका उत्पादन वे स्वयं नहीं कर सकते।
 - संसाधनों का कुशल आवंटन: उत्पादन के साधन उन क्षेत्रों में लगते हैं जहाँ वे सर्वाधिक कुशल हैं।
3. अप्रत्यक्ष (गतिशील) लाभ:
 - बाजार का विस्तार: स्थानीय उद्योगों को बड़ा बाजार मिलता है, जिससे पैमाने की बचतें (Economies of Scale) मिलती हैं।
 - तकनीकी हस्तांतरण: विकसित देशों से विकासशील देशों में आधुनिक तकनीक का प्रवाह होता है।
 - प्रतिस्पर्धा में वृद्धि: घरेलू एकाधिकार समाप्त होते हैं और दक्षता बढ़ती है।

प्रश्न 9: स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) नीति के पक्ष और विपक्ष में तर्कों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** स्वतंत्र व्यापार नीति का अर्थ है कि राज्यों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आवागमन पर सरकार द्वारा कोई प्रशुल्क, कोटा या प्रतिबंध न लगाया जाए।
2. **पक्ष में तर्क:**
 - संसाधनों का अधिकतम और कुशल आवंटन।
 - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा बढ़ने से उपभोक्ताओं को सस्ती व गुणवत्तापूर्ण वस्तुएं मिलना।
 - पैमाने की बचतें और बाजार का वैश्विक विस्तार।
3. **विपक्ष में तर्क:**
 - **विकासशील देशों के उद्योगों को नुकसान:** विदेशी कंपनियों की तुलना में स्थानीय उद्योग प्रतिस्पर्धी नहीं हो पाते।
 - **आर्थिक निर्भरता:** अति-विशिष्टीकरण से देश अन्य देशों पर अत्यधिक निर्भर हो जाता है।
 - **डंपिंग का खतरा:** शक्तिशाली देश सस्ते सामान से विदेशी बाजारों को पाट देते हैं।

प्रश्न 10: संरक्षणवादी नीति (Protectionism) के पक्ष में प्रमुख तर्कों का विस्तृत विवरण दीजिए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** अपने देश के उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए आयातों पर कर (Tariff) या कोटा लगाने की नीति संरक्षणवाद कहलाती है।
2. **पक्ष में प्रमुख तर्क:**
 - **बाल उद्योग तर्क (Infant Industry Argument):** नए उद्योगों को शुरुआती चरण में तब तक संरक्षण चाहिए जब तक वे परिपक्व और प्रतिस्पर्धी न बन जाएं।
 - **रोजगार संरक्षण तर्क:** विदेशी माल को रोककर घरेलू उद्योगों को चालू रखना और रोजगार बचाना।
 - **डंपिंग से बचाव (Anti-Dumping):** अनुचित विदेशी प्रतिस्पर्धा को रोकना।
 - **राष्ट्रीय सुरक्षा तर्क:** रक्षा उपकरणों और खाद्य सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता बनाए

रखना।

- **भुगतान संतुलन में सुधार:** आयातों को कम करके घाटा नियंत्रित करना।

प्रश्न 11: प्रशुल्क (Tariff) के विभिन्न प्रकारों और उनके आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** सीमा पार से आने वाले (आयात) या जाने वाले (निर्यात) सामान पर सरकार द्वारा लगाया जाने वाला कर प्रशुल्क कहलाता है।
2. **प्रशुल्क के प्रकार:**
 - **यथामूल्य प्रशुल्क (Ad-valorem):** वस्तु के कुल मूल्य के निश्चित प्रतिशत के रूप में।
 - **विशिष्ट प्रशुल्क (Specific):** वस्तु की प्रति इकाई या वजन के हिसाब से।
 - **मिश्रित प्रशुल्क (Compound):** यथामूल्य और विशिष्ट दोनों का संयोजन।
3. **आर्थिक प्रभाव:**
 - **कीमत प्रभाव:** घरेलू बाजार में वस्तु की कीमत बढ़ जाती है।
 - **उपभोग प्रभाव:** कीमत बढ़ने से वस्तु की घरेलू मांग घटती है।
 - **उत्पादन प्रभाव:** घरेलू उत्पादक अधिक उत्पादन करने के लिए प्रेरित होते हैं।
 - **राजस्व प्रभाव:** सरकार को कर से आय होती है।
 - **व्यापार प्रभाव:** आयात की कुल मात्रा में कमी आती है।

प्रश्न 12: गैर-प्रशुल्क बाधाएं (Non-Tariff Barriers - NTBs) क्या हैं? इसके मुख्य रूपों को समझाइए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** वे सभी सरकारी नियम, कानून और नीतियां (कर के अलावा) जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रतिबंधित करने का काम करती हैं।
2. **प्रमुख रूप:**
 - **आयात कोटा (Import Quotas):** आयात की जाने वाली वस्तु की अधिकतम मात्रा या मूल्य

निश्चित कर देना।

- **स्वैच्छिक निर्यात प्रतिबंध (VERs):** दो देशों के बीच समझौते के तहत निर्यात करने वाला देश स्वयं अपने निर्यात की सीमा तय करता है।
- **तकनीकी व स्वास्थ्य मानक (SPS standards):** कड़े गुणवत्ता, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय नियम लागू करना ताकि आयात रोका जा सके।
- **सरकारी क्रय नीतियां:** सरकारी खरीद में केवल स्थानीय सामान को प्राथमिकता देना।
- **जटिल कस्टम कागजी प्रक्रिया:** सीमा शुल्क जांच को धीमा और जटिल बनाना।

प्रश्न 13: आयातांश या कोटा (Import Quota) क्या है? यह प्रशुल्क (Tariff) से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर:

1. **कोटा का अर्थ:** किसी निश्चित समय अवधि में किसी वस्तु की आयात की जाने वाली अधिकतम मात्रा या मूल्य की सीमा तय करना।
2. **कोटा बनाम प्रशुल्क का अंतर:**
 - **निश्चितता:** कोटा आयात की मात्रा को सीधे और निश्चित रूप से सीमित करता है, जबकि प्रशुल्क कीमत बढ़ाकर अप्रत्यक्ष रूप से आयात घटाता है।
 - **सरकारी आय:** प्रशुल्क से सरकार को प्रत्यक्ष राजस्व मिलता है, जबकि कोटा का लाभ आयात लाइसेंस प्राप्त व्यापारियों को 'कोटा रेंट' के रूप में मिलता है (जब तक लाइसेंस नीलाम न किए जाएं)।
 - **लचीलापन:** प्रशुल्क विदेशी कीमतों में गिरावट के अनुसार निष्प्रभावी हो सकता है, परंतु कोटा किसी भी स्थिति में आयात को बढ़ने नहीं देता।

प्रश्न 14: डंपिंग (Dumping / राशिपातन) क्या है? इसके प्रकार और इसे रोकने के उपाय बताइए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** जब कोई उत्पादक अपने माल को विदेशी बाजार में उस कीमत पर बेचता है जो उसके घरेलू बाजार की कीमत या उत्पादन लागत से काफी कम होती है।

2. प्रकार:

- **विद्युत/अस्थायी डंपिंग (Sporadic):** अतिरिक्त बचे माल (Surplus Stock) को निकालने के लिए कभी-कभार की गई डंपिंग।
- **अल्पकालिक डंपिंग (Intermittent/Predatory):** विदेशी प्रतिस्पर्धियों को समाप्त करके एकाधिकार स्थापित करने के लिए की जाने वाली डंपिंग।
- **सतत डंपिंग (Persistent):** लगातार विदेशी बाजार में कम और घरेलू बाजार में अधिक कीमत वसूलना।

3. रोकने के उपाय: एंटी-डंपिंग ड्यूटी (Anti-Dumping Duty) लगाना, आयात कोटा तय करना, और प्रतिशोधात्मक प्रशुल्क लागू करना।

प्रश्न 15: भुगतान संतुलन (Balance of Payments - BOP) की परिभाषा दीजिए तथा इसके घटकों को विस्तार से समझाइए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** किसी देश का भुगतान संतुलन एक निश्चित अवधि (सामान्यतः एक वर्ष) में उस देश के निवासियों और शेष विश्व के निवासियों के बीच हुए सभी आर्थिक लेन-देन का एक व्यवस्थित और क्रमबद्ध लेखा-जोखा होता है।
2. **भुगतान संतुलन के घटक:**
 - **चालू खाता (Current Account):**
 - दृश्य व्यापार (Goods) - वस्तुओं का आयात-निर्यात।
 - अदृश्य व्यापार (Services) - सेवाएं (बैंकिंग, बीमा, पर्यटन)।
 - एकतरफा हस्तांतरण (Unilateral Transfers) - उपहार, अनुदान, प्रेषण (Remittances)।
 - **पूँजी खाता (Capital Account):**
 - विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) और पोर्टफोलियो निवेश (FPI)।
 - ऋण (सरकारी व व्यावसायिक कर्ज़)।
 - बैंक जमा और विदेशी मुद्रा भंडार।
 - **भूल-चूक और समायोजन (Errors and Omissions)।**

प्रश्न 16: व्यापार संतुलन (Balance of Trade) और भुगतान संतुलन (Balance of Payments) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

1. व्यापार संतुलन (BOT):

- केवल दृश्य वस्तुओं (Visible Goods) के आयात और निर्यात का रिकॉर्ड होता है।
- यह भुगतान संतुलन के चालू खाते का एक छोटा सा हिस्सा है।
- इसमें सेवाओं और पूँजीगत प्रवाह को शामिल नहीं किया जाता।
- यह पक्ष में या विपक्ष में (घाटे या अधिशेष) हो सकता है।

2. भुगतान संतुलन (BOP):

- यह दृश्य वस्तुओं, अदृश्य सेवाओं और पूँजीगत हस्तांतरण सभी का कुल रिकॉर्ड है।
- यह एक व्यापक अवधारणा है जिसमें BOT शामिल होता है।
- दोहरा-लेखा प्रणाली (Double Entry System) के कारण यह बहीखाता की दृष्टि से हमेशा संतुलित रहता है।

प्रश्न 17: भुगतान संतुलन में असंतुलन (Deficit) के प्रमुख कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

1. आर्थिक कारण:

- विकास योजनाएं: विकासशील देशों को बड़े पैमाने पर पूँजीगत सामान और तकनीक आयात करनी पड़ती है।
- घरेलू मुद्रास्फीति: देश में कीमतें बढ़ने से आयात सस्ते और निर्यात महंगे हो जाते हैं, जिससे व्यापार घाटा बढ़ता है।
- वैश्विक मंदी: मुख्य आयातकर्ता देशों में मंदी आने से निर्यात घट जाता है।

2. राजनीतिक कारण: राजनीतिक अस्थिरता या युद्ध की स्थिति से विदेशी पूँजी बाहर भागती है (Capital Flight)।

3. सामाजिक कारण: प्रदर्शन प्रभाव (Demonstration Effect) के कारण विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण बढ़ता है जिससे आयात में वृद्धि होती है।

प्रश्न 18: भुगतान संतुलन के असंतुलन को दूर करने के मौद्रिक और गैर-मौद्रिक उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

1. मौद्रिक उपाय (Monetary Measures):

- **मुद्रा का अवमूल्यन (Devaluation):** सरकार द्वारा स्वदेशी मुद्रा का आधिकारिक मूल्य विदेशी मुद्रा की तुलना में कम करना, जिससे निर्यात सस्ते और आयात महंगे होते हैं।
- **मुद्रा संकुचन (Deflation):** साख नियंत्रण करके घरेलू बाजार में कीमतें गिराना ताकि निर्यात को बढ़ावा मिले।
- **विदेशी विनिमय नियंत्रण (Exchange Control):** सरकार द्वारा विदेशी मुद्रा के उपयोग पर सख्त नियंत्रण लगाना।

2. गैर-मौद्रिक उपाय (Non-Monetary Measures):

- **प्रशुल्क और कोटा बढ़ाना:** आयातों को प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित करना।
- **निर्यात प्रोत्साहन (Export Promotion):** निर्यातक उद्योगों को सब्सिडी, कर छूट और रियायतें देना।
- **आयात प्रतिस्थापन (Import Substitution):** जिन वस्तुओं का आयात किया जा रहा है, उनका उत्पादन देश के भीतर ही शुरू करना।

प्रश्न 19: मुद्रा के अवमूल्यन (Devaluation) और मार्शल-लर्नर शर्त (Marshall-Lerner Condition) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

1. **अवमूल्यन का अर्थ:** जब सरकार या केंद्रीय बैंक आधिकारिक रूप से विदेशी मुद्राओं के मुकाबले अपनी घरेलू मुद्रा का मूल्य कम कर देता है।
2. **मार्शल-लर्नर शर्त:** अवमूल्यन केवल तभी भुगतान संतुलन के घाटे को सुधारने में सफल होगा जब आयात और निर्यात की मांग की लोच का योग 1 से अधिक हो।
 - सूत्र: $e_x + e_m > 1$

- (जहाँ e_x = निर्यात की मांग की लोच, e_m = आयात की मांग की लोच)।
- 3. **परिणाम:** यदि $e_x + e_m < 1$, तो अवमूल्यन करने पर भुगतान संतुलन का घाटा कम होने के बजाय और अधिक बढ़ जाएगा।

प्रश्न 20: जे-वक्र प्रभाव (J-Curve Effect) की अवधारणा को आरेखीय रूप से समझाइए।

उत्तर:

1. **अवधारणा:** जब कोई देश अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करता है, तो भुगतान संतुलन में तुरंत सुधार नहीं होता। शुरुआती समय में घाटा और गहरा होता है, लेकिन कुछ समय बाद (दीर्घकाल में) इसमें सुधार होना शुरू होता है।
2. **J-आकार का कारण:**
 - **अल्पकाल:** आयात और निर्यात के सौदे पहले से तय अनुबंधों पर आधारित होते हैं। अल्पकाल में मांग की लोच बेलोचदार होती है ($e_x + e_m < 1$), इसलिए आयात बिल बढ़ जाता है और घाटा बढ़ता है।
 - **दीर्घकाल:** व्यापारी और उपभोक्ता नई कीमतों के अनुसार खुद को ढालते हैं। मांग लोचदार हो जाती है ($e_x + e_m > 1$) और व्यापार संतुलन में सुधार होता है।
3. **ग्राफ:** चालू खाते का संतुलन समय के साथ अंग्रेजी के 'J' अक्षर जैसा वक्र बनाता है।

प्रश्न 21: विदेशी विनिमय दर (Foreign Exchange Rate) के निर्धारण का 'मांग और पूर्ति सिद्धांत' (Mint Parity / Demand and Supply Theory) क्या है?

उत्तर:

1. **परिचय:** परिवर्तनशील या तैरती विनिमय दर प्रणाली के तहत विनिमय दर का निर्धारण विदेशी मुद्रा बाजार में उसकी मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है।
2. **विदेशी मुद्रा की मांग:** आयात करने, विदेश यात्रा करने, विदेशों में निवेश करने और लाभांश भेजने के लिए विदेशी मुद्रा की मांग की जाती है। विनिमय दर घटने पर मांग बढ़ती है (ढाल नीचे की ओर)।
3. **विदेशी मुद्रा की पूर्ति:** निर्यात करने, विदेशी निवेश प्राप्त करने और प्रेषण (Remittances) के माध्यम से विदेशी मुद्रा की पूर्ति होती है। विनिमय दर बढ़ने पर पूर्ति बढ़ती है (ढाल ऊपर की ओर)।
4. **संतुलन:** जहाँ मांग वक्र ($D_{\$}$) और पूर्ति वक्र ($S_{\$}$) आपस में काटते हैं, वही बिंदु संतुलन विनिमय दर

निर्धारित करता है।

प्रश्न 22: गुस्ताव कैसल के 'क्रय शक्ति समता सिद्धांत' (Purchasing Power Parity Theory - PPP) की विस्तृत विवेचना कीजिए।

उत्तर:

1. **परिचय:** स्वीडिश अर्थशास्त्री गुस्ताव कैसल ने कागजी/अपरिवर्तनीय मुद्रा प्रणाली के तहत विनिमय दर निर्धारण के लिए PPP सिद्धांत प्रतिपादित किया।
2. **मूल सिद्धांत:** दो देशों की मुद्राओं के बीच विनिमय दर उन देशों में उन मुद्राओं की क्रय शक्ति (Purchasing Power) के अनुपात द्वारा तय होती है।
3. **दो रूप:**
 - **निरपेक्ष रूप (Absolute Form):** विनिमय दर दोनों देशों में समान वस्तु बास्केट के मूल्य का अनुपात है। ($\$ER = P_A / P_B$)।
 - **सापेक्ष रूप (Relative Form):** दो अवधियों के बीच विनिमय दर में परिवर्तन दोनों देशों के मुद्रास्फीति/मूल्य सूचकांक में परिवर्तन के अनुपात पर निर्भर करता है।
4. **सीमाएं:** यह सिद्धांत परिवहन लागत, पूंजीगत प्रवाह और व्यापारिक बाधाओं की उपेक्षा करता है।

प्रश्न 23: विनिमय दर निर्धारण का 'भुगतान संतुलन दृष्टिकोण' (Balance of Payments Theory of Exchange Rate) क्या है?

उत्तर:

1. **परिचय:** इस सिद्धांत के अनुसार किसी देश की मुद्रा की विनिमय दर उसके भुगतान संतुलन की स्थिति द्वारा निर्धारित होती है।
2. **कार्यप्रणाली:**
 - यदि किसी देश का भुगतान संतुलन **अधिशेष (Surplus)** में है, तो विदेशी बाजार में उसकी मुद्रा की मांग बढ़ेगी और उसकी विनिमय दर मजबूत (बढ़ेगी) होगी।
 - यदि भुगतान संतुलन **घाटे (Deficit)** में है, तो विदेशी मुद्रा की मांग बढ़ेगी और स्वदेशी मुद्रा की विनिमय दर गिर जाएगी।

3. **श्रेष्ठता:** यह सिद्धांत क्रय शक्ति समता सिद्धांत से बेहतर है क्योंकि यह केवल मूल्य स्तर ही नहीं, बल्कि भुगतान संतुलन के सभी चालू व पूंजीगत घटकों को शामिल करता है।

प्रश्न 24: स्थिर विनिमय दर (Fixed Exchange Rate) और परिवर्तनशील विनिमय दर (Flexible Exchange Rate) के गुणों और दोषों की तुलना कीजिए।

उत्तर:

1. स्थिर विनिमय दर:

- **गुण:** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अनिश्चितता समाप्त होती है; पूंजी प्रवाह को बढ़ावा मिलता है; और मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रहता है।
- **दोष:** विदेशी मुद्रा भंडार का बड़ा हिस्सा बनाए रखना पड़ता है; और घरेलू आर्थिक स्वायत्तता प्रभावित होती है।

2. परिवर्तनशील (तैरती) विनिमय दर:

- **गुण:** यह स्वतः-समायोज्य (Self-adjusting) है; विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखने की जरूरत नहीं होती; और स्वतंत्र आर्थिक नीतियां बनाई जा सकती हैं।
- **दोष:** सट्टेबाजी (Speculation) और अनिश्चितता बढ़ती है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को नुकसान पहुंच सकता है।

प्रश्न 25: प्रबंधित तैरती विनिमय दर प्रणाली (Managed Floating Exchange Rate System) क्या है?

उत्तर:

1. **अर्थ:** यह स्थिर और परिवर्तनशील विनिमय दर प्रणालियों का एक मिश्रित रूप है। इसे 'डर्टी फ्लोटिंग' (Dirty Floating) भी कहा जाता है।
2. **कार्यप्रणाली:**
 - सामान्य परिस्थितियों में विनिमय दर का निर्धारण बाजार की मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा ही होने दिया जाता है।
 - लेकिन जब विनिमय दर में अत्यधिक उतार-चढ़ाव (Volatilities) आता है, तो देश का केंद्रीय बैंक

(जैसे भारत में RBI) बाजार में हस्तक्षेप करता है—विदेशी मुद्रा बेचकर या खरीदकर दर को एक सीमा में बनाए रखता है।

3. **उपयोगिता:** यह बाजार की गतिशीलता और स्थिरता दोनों का लाभ प्रदान करती है।

प्रश्न 26: विदेशी मुद्रा बाजार (Foreign Exchange Market) के कार्यों और इसके प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** वह बाजार जहाँ विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मुद्राओं की खरीद-बिक्री और विनिमय किया जाता है।
2. **प्रमुख कार्य:**
 - **हस्तांतरण कार्य (Transfer Function):** एक देश से दूसरे देश में क्रय शक्ति का हस्तांतरण करना।
 - **साख कार्य (Credit Function):** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए अल्पकालिक साख/ऋण उपलब्ध कराना।
 - **हैजिंग कार्य (Hedging Function):** विनिमय दर में होने वाले जोखिम और उतार-चढ़ाव से व्यापारियों का बचाव करना।
3. **बाजार के दो रूप:**
 - **हाजिर बाजार (Spot Market):** जहाँ मुद्राओं का तत्काल (2 दिन के भीतर) लेनदेन होता है।
 - **वायदा बाजार (Forward Market):** जहाँ भविष्य की तिथि पर तय दर पर लेनदेन का अनुबंध होता है।

प्रश्न 27: विदेशी व्यापार गुणक (Foreign Trade Multiplier) क्या है? यह राष्ट्रीय आय को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर:

1. **अर्थ:** विदेशी व्यापार गुणक यह दर्शाता है कि निर्यात में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप किसी देश की कुल राष्ट्रीय आय में कितना गुना परिवर्तन होता है।
2. **सूत्र:**
$$K_f = \frac{\Delta Y}{\Delta X} = \frac{1}{MPS + MPM}$$
 - (जहाँ MPS = बचत की सीमांत प्रवृत्ति, MPM = आयात की सीमांत प्रवृत्ति)।

3. व्याख्या:

- जब निर्यात (\$X\$) बढ़ता है, तो निर्यात क्षेत्र में लगी आय बढ़ती है, जिससे उपभोग बढ़ता है और राष्ट्रीय आय में कई गुना वृद्धि होती है।
- आयात (\$M\$) आय के प्रवाह से एक 'रिसाव' (Leakage) का काम करता है, जो गुणक के आकार को छोटा कर देता है।

प्रश्न 28: अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना, उद्देश्यों और इसके प्रमुख कार्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर:

1. **स्थापना:** 1944 के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के तहत निर्णय लिया गया और 27 दिसंबर 1945 को स्थापना हुई (कार्य प्रारंभ 1947)।
2. **प्रमुख उद्देश्य:**
 - वैश्विक मौद्रिक सहयोग को बढ़ावा देना।
 - विनिमय दर की स्थिरता बनाए रखना।
 - सदस्य देशों के भुगतान संतुलन के अल्पकालिक घाटे को दूर करने के लिए वित्तीय सहायता देना।
 - अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संतुलित विस्तार में मदद करना।
3. **प्रमुख कार्य:** अल्पकालिक ऋण देना, तकनीकी सहायता व प्रशिक्षण प्रदान करना, तथा सदस्य देशों की आर्थिक नीतियों की निगरानी (Surveillance) करना।

प्रश्न 29: विशेष आहरण अधिकार (Special Drawing Rights - SDR) क्या है? इसे 'पेपर गोल्ड' क्यों कहा जाता है?

उत्तर:

1. **अर्थ:** SDR अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा 1969 में सृजित की गई एक अंतर्राष्ट्रीय आरक्षित परिसंपत्ति (International Reserve Asset) है।
2. **विशेषताएं:**
 - यह कोई भौतिक मुद्रा नहीं है, बल्कि IMF के खाते में केवल एक बहीखाता प्रविष्टि (Bookkeeping

Entry) है।

- इसका मूल्य विश्व की 5 प्रमुख मुद्राओं के बास्केट पर आधारित है: अमरीकी डॉलर, यूरो, चीनी युआन, जापानी येन और ब्रिटिश पाउंड।
- 3. 'पेपर गोल्ड' क्यों कहते हैं?: क्योंकि यह सोने या डॉलर का स्थान लेकर अंतर्राष्ट्रीय तरलता (International Liquidity) की कमी को पूरा करता है और सदस्य देश इसके माध्यम से आपस में विदेशी मुद्राएं हासिल कर सकते हैं।

प्रश्न 30: विश्व बैंक (World Bank / IBRD) के संगठन, उद्देश्यों और विकासशील देशों में इसकी भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

1. **स्थापना:** 1944 (ब्रेटन वुड्स सम्मेलन), औपचारिक नाम: अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (IBRD)।
2. **उद्देश्य:** सदस्य देशों के दीर्घकालिक आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए वित्तीय सहायता और परामर्श देना।
3. **कार्य एवं भूमिका:**
 - बुनियादी ढांचा परियोजनाओं (सड़क, बिजली, बंदरगाह, सिंचाई) के लिए दीर्घकालिक ऋण देना।
 - स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि सुधारों के लिए रियायती शर्तों पर ऋण प्रदान करना।
4. **विश्व बैंक समूह के 5 संस्थान:** IBRD, IDA (अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ - इसे 'सॉफ्ट लोन विंडो' कहते हैं), IFC, MIGA, और ICSID।

प्रश्न 31: विश्व व्यापार संगठन (WTO) के उद्भव, सिद्धांतों और इसके प्रमुख कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

1. **उद्भव:** 1 जनवरी 1995 को गैट (GATT - General Agreement on Tariffs and Trade) के स्थान पर मार्केश समझौते के तहत स्थापना हुई। मुख्यालय: जेनेवा।
2. **प्रमुख सिद्धांत:**
 - **गैर-भेदभाव:** सबसे पसंदीदा राष्ट्र (MFN) का दर्जा और राष्ट्रीय व्यवहार (National Treatment)।

- मुक्त व्यापार को प्रोत्साहन: प्रशुल्क और गैर-प्रशुल्क बाधाओं को धीरे-धीरे कम करना।
 - पारदर्शिता और पूर्वानुमेयता।
3. **प्रमुख कार्य:** बहुपक्षीय व्यापार समझौतों को लागू करना, व्यापार विवादों का निपटारा करना (**Dispute Settlement Mechanism**), तथा वैश्विक व्यापार नीतियों की निगरानी करना।

प्रश्न 32: WTO के TRIPS और TRIMS समझौतों की व्याख्या कीजिए और भारत पर इसके प्रभाव बताइए।

उत्तर:

1. **TRIPS (बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलू):**
 - पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क और भौगोलिक संकेत (**GI tags**) को अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा देता है।
 - प्रभाव: भारत को अपने पेटेंट कानून में संशोधन करके 'प्रोडक्ट पेटेंट' प्रणाली अपनानी पड़ी, जिससे दवाओं की कीमतें प्रभावित हुईं।
2. **TRIMS (व्यापार संबंधी निवेश उपाय):**
 - विदेशी निवेशकों पर ऐसे प्रतिबंध लगाने से रोकता है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बाधित करते हैं (जैसे स्थानीय सामग्री का उपयोग करने की अनिवार्यता समाप्त करना)।
 - प्रभाव: विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (**FDI**) का प्रवाह भारत में सुगम हुआ है।

प्रश्न 33: क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण (**Regional Economic Integration**) के विभिन्न चरणों/स्तरों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

1. **प्रिफरेंशियल ट्रेड एरिया (PTA):** सदस्य देश कुछ चुनिंदा वस्तुओं पर प्रशुल्क कम करते हैं।
2. **मुक्त व्यापार क्षेत्र (Free Trade Area - FTA):** सदस्य देश आपस में सभी प्रशुल्क हटा लेते हैं, परंतु गैर-सदस्यों के प्रति स्वतंत्र प्रशुल्क नीति रखते हैं (उदा. **NAFTA**)।
3. **सीमा शुल्क संघ (Customs Union):** आपस में शून्य प्रशुल्क + गैर-सदस्यों के लिए एक समान बाह्य प्रशुल्क (**Common External Tariff**)।
4. **साझा बाजार (Common Market):** प्रशुल्क मुक्ति + साधनों (श्रम व पूंजी) की स्वतंत्र आवाजाही।

5. **आर्थिक संघ (Economic Union):** साझा बाजार + मौद्रिक व राजकोषीय नीतियों का एकीकरण (उदा. यूरोपीय संघ - EU)।

प्रश्न 34: जैकब वाइनर के 'व्यापार सृजन' (Trade Creation) और 'व्यापार विपथन' (Trade Diversion) के सिद्धांतों को समझाइए।

उत्तर:

1. व्यापार सृजन (Trade Creation):

- जब सीमा शुल्क संघ बनने से उच्च लागत वाले घरेलू उत्पादन का स्थान संघ के किसी निम्न लागत वाले सदस्य देश का आयात ले लेता है।
- इससे विश्व कल्याण और आर्थिक दक्षता में वृद्धि होती है।

2. व्यापार विपथन (Trade Diversion):

- जब सीमा शुल्क संघ बनने के कारण संघ के बाहर स्थित निम्न लागत वाले देश से आयात बंद होकर संघ के भीतर स्थित उच्च लागत वाले सदस्य देश से आयात होने लगता है।
- इससे संसाधनों का अकुशल आवंटन होता है और कल्याण गिरता है।

प्रश्न 35: SAARC और SAFTA पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

1. SAARC (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन):

- स्थापना: 8 दिसंबर 1985 (ढाका में), मुख्यालय: काठमांडू।
- 8 सदस्य देश: भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव और अफगानिस्तान।
- उद्देश्य: दक्षिण एशिया के देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाना।

2. SAFTA (दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र):

- जनवरी 2004 में हस्ताक्षरित और 2006 से लागू।
- उद्देश्य: सदस्य देशों के बीच प्रशुल्क दरों को घटाकर शून्य के करीब लाना ताकि क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा मिले।
- चुनौतियां: राजनीतिक तनाव (विशेषकर भारत-पाक) के कारण SAFTA अपनी क्षमता का पूरा उपयोग

नहीं कर पाया है।

प्रश्न 36: एशियाई विकास बैंक (Asian Development Bank - ADB) के कार्यों और उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

1. **स्थापना:** 1966 में, मुख्यालय: मनीला (फिलीपींस)।
2. **उद्देश्य:** एशिया और प्रशांत क्षेत्र में आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देना तथा अत्यधिक गरीबी को समाप्त करना।
3. **प्रमुख कार्य:**
 - सदस्य देशों को विकास परियोजनाओं के लिए रियायती ऋण और अनुदान (Grants) देना।
 - बुनियादी ढांचे (सड़क, ऊर्जा, शहरी विकास) में निवेश बढ़ाना।
 - तकनीकी सहायता और नीतिगत परामर्श प्रदान करना।
4. **भारत में भूमिका:** ADB भारत में सड़क नेटवर्क, मेट्रो रेल परियोजनाओं और स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं के लिए बड़ा ऋणदाता रहा है।

प्रश्न 37: अनकटार्ड (UNCTAD) की स्थापना, उद्देश्यों और विकासशील देशों के लिए इसके योगदान की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

1. **स्थापना:** 1964 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा एक स्थायी अंग के रूप में। मुख्यालय: जेनेवा।
2. **मुख्य उद्देश्य:** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विकासशील देशों के एकीकरण को बढ़ावा देना ताकि उनका आर्थिक विकास तेजी से हो सके।
3. **प्रमुख योगदान:**
 - **GSP (सामान्यीकृत प्राथमिकताओं की प्रणाली):** विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के निर्यातों को बिना शर्त प्रशुल्क में छूट दिलाना।
 - प्राथमिक वस्तुओं की कीमतों में स्थिरता के लिए अंतर्राष्ट्रीय जिंस समझौतों (Commodity Agreements) को बढ़ावा देना।

- विकासशील देशों के ऋण बोझ को कम करने के लिए नीतियां बनाना।

प्रश्न 38: विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

1. विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI):

- विदेशी निवेशकों द्वारा किसी देश में भौतिक परिसंपत्तियों (कारखाने, भवन) में निवेश या कंपनी के प्रबंधन पर नियंत्रण प्राप्त करना।
- यह दीर्घकालिक निवेश होता है और इसे आसानी से वापस नहीं निकाला जा सकता।
- यह तकनीक हस्तांतरण और रोजगार सृजन लाता है।

2. विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI):

- विदेशी निवेशकों द्वारा देश के शेयर बाजार, बॉन्ड या वित्तीय परिसंपत्तियों में निवेश।
- इसमें कंपनी के प्रबंधन पर कोई नियंत्रण नहीं होता।
- यह अत्यंत अस्थिर (Hot Money) होता है और बाजार में अनिश्चितता आते ही देश से बाहर चला जाता है।

प्रश्न 39: बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में योगदान और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर इसके प्रभावों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** वे कंपनियां जिनका मुख्यालय एक देश में होता है परंतु उनका उत्पादन और व्यापार कई देशों में फैला होता है।
2. **सकारात्मक प्रभाव (विकासशील देशों पर):**
 - आधुनिक तकनीक और प्रबंधकीय कौशल का आगमन।
 - विदेशी पूंजी का प्रवाह जिससे पूंजी निर्माण दर बढ़ती है।
 - प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार का सृजन।
 - निर्यातों में वृद्धि जिससे विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

3. नकारात्मक प्रभाव:

- घरेलू छोटे उद्योगों का विनाश।
- लाभ का बड़ा हिस्सा अपने गृह देश वापस भेजना (Repatriation of Profits)।
- प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और पर्यावरण को नुकसान।

प्रश्न 40: इष्टतम प्रशुल्क (Optimum Tariff) की अवधारणा को समझाइए।

उत्तर:

1. **अर्थ:** वह प्रशुल्क दर जो किसी देश के कुल राष्ट्रीय कल्याण (National Welfare) को अधिकतम करती है।
2. **सिद्धान्त:** जब एक बड़ा देश आयातों पर प्रशुल्क लगाता है, तो इससे व्यापार की शर्तें (Terms of Trade) उसके पक्ष में सुधरती हैं, लेकिन व्यापार की कुल मात्रा (Trade Volume) घटती है।
3. **संतुलन:** इष्टतम प्रशुल्क वह बिंदु है जहाँ व्यापार की शर्तों में सुधार से होने वाला लाभ, व्यापार की मात्रा में कमी से होने वाली हानि से अधिक होता है और दोनों का अंतर (शुद्ध लाभ) अधिकतम होता है।
4. **शर्त:** इष्टतम प्रशुल्क केवल वही देश लगा सकते हैं जिनके पास बाजार में विदेशी वस्तुओं की मांग को प्रभावित करने की शक्ति (Monopsony Power) होती है।

प्रश्न 41: व्यापार का 'साधन-कीमत समानीकरण प्रमेय' (Factor-Price Equalization Theorem) क्या है?

उत्तर:

1. **परिचय:** बर्टिल ओहलिन और पॉल सैमुएलसन द्वारा विकसित यह प्रमेय हेक्चर-ओहलिन सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण विस्तार है।
2. **मूल विचार:** स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार न केवल वस्तुओं की कीमतों को समान बनाता है, बल्कि देशों के बीच उत्पादन के साधनों की कीमतों (जैसे मजदूरों की मजदूरी और पूंजी पर ब्याज) को भी स्वतः समान कर देता है, भले ही साधन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अगतिशील हों।
3. **प्रक्रिया:** श्रम-प्रचुर देश श्रम-गहन वस्तुओं का निर्यात करता है, जिससे वहाँ श्रम की मांग और मजदूरी बढ़ती है। पूंजी-प्रचुर देश में श्रम-गहन आयात आने से वहाँ मजदूरी घटती है। अंततः दोनों देशों में मजदूरी का स्तर बराबर हो जाता है।

प्रश्न 42: ब्रेटन वुड्स प्रणाली (Bretton Woods System) का ऐतिहासिक महत्व और इसके पतन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

1. **ऐतिहासिक महत्व:** 1944 में स्थापित इस प्रणाली ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था को पुनः व्यवस्थित किया। इसके तहत डॉलर को \$35 प्रति औंस सोने से बांधा गया और अन्य मुद्राओं को डॉलर से जोड़ा गया। IMF और विश्व बैंक इसी व्यवस्था की देन हैं।
2. **पतन के कारण (1971-1973):**
 - **ट्रिफिन विरोधाभास (Triffin Dilemma):** वैश्विक तरलता बनाए रखने के लिए अमेरिका को लगातार व्यापार घाटा सहना पड़ा, जिससे डॉलर में विश्व का विश्वास घट गया।
 - **अमरीका में स्वर्ण भंडार की कमी:** अमरीका के पास डॉलर के बदले सोना देने के लिए पर्याप्त आरक्षित स्वर्ण नहीं बचा।
 - अगस्त 1971 में राष्ट्रपति निक्सन द्वारा डॉलर का सोने में परिवर्तनशीलता को समाप्त करने की घोषणा के साथ ही यह प्रणाली ध्वस्त हो गई।

प्रश्न 43: 'व्यापार का प्रदर्शन प्रभाव' (Demonstration Effect in Trade) क्या है?

उत्तर:

1. **प्रतिपादक:** राग्नार नर्से और जेम्स ड्यूजेनबरी।
2. **अर्थ:** विकासशील देशों के निवासी जब विकसित देशों के निवासियों के उच्च जीवन स्तर और उपभोग पैटर्न को देखते हैं, तो वे भी उनकी नकल करके विदेशी और विलासितापूर्ण वस्तुओं का उपभोग करने लगते हैं।
3. **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव:**
 - इससे विकासशील देशों में आयातों की मांग में अप्रत्याशित वृद्धि होती है।
 - घरेलू बचत दर गिरती है क्योंकि लोग आय का बड़ा हिस्सा उपभोग पर खर्च कर देते हैं।
 - भुगतान संतुलन में घाटा बढ़ता है।

प्रश्न 44: 'अंकटाड की GSP प्रणाली' (Generalized System of Preferences) क्या है?

उत्तर:

1. **अर्थ:** 1968 में अंकटाड (UNCTAD) के सम्मेलन में स्वीकृत एक प्रणाली, जिसके तहत विकसित देश विकासशील देशों से आने वाले कुछ चुनिंदा सामानों पर सामान्य सीमा शुल्क की तुलना में कम या शून्य प्रशुल्क लगाते हैं।
2. **विशेषता:** यह गैर-पारस्परिक (Non-reciprocal) प्रणाली है, अर्थात् विकासशील देशों को बदले में विकसित देशों के सामान पर कर छूट देने की बाध्यता नहीं होती।
3. **लाभ:** इसने विकासशील देशों के औद्योगिक निर्यातों को बढ़ावा देने और उन्हें वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाने में बड़ी भूमिका निभाई।

प्रश्न 45: 'स्वैच्छिक निर्यात प्रतिबंध' (Voluntary Export Restraints - VERs) क्या है?

उत्तर:

1. **अर्थ:** यह एक गैर-प्रशुल्क बाधा है जिसमें आयात करने वाला देश कानूनी प्रतिबंध लगाने के बजाय निर्यात करने वाले देश पर यह दबाव बनाता है कि वह 'स्वैच्छिक' रूप से एक निश्चित सीमा से अधिक माल का निर्यात न करे।
2. **उदाहरण:** 1980 के दशक में अमेरिका द्वारा जापान पर जापानी कारों के निर्यात को सीमित करने के लिए बनाया गया दबाव।
3. **प्रभाव:** आयात करने वाले देश के उद्योगों को संरक्षण मिल जाता है और कानूनी विवाद से बचाव होता है, परंतु उपभोक्ताओं को महंगी वस्तुएं मिलती हैं।

प्रश्न 46: विदेशी विनिमय बाजार में 'सट्टेबाजी' (Speculation) और 'हेजिंग' (Hedging) में क्या अंतर है?

उत्तर:

1. **हेजिंग (Hedging):**
 - भविष्य में विनिमय दर में होने वाले उतार-चढ़ाव के जोखिम से खुद का बचाव करने की प्रक्रिया।

- व्यापारी वायदा बाजार (**Forward Market**) में अनुबंध करके आज ही भविष्य की विनिमय दर तय कर लेते हैं।
- इसका उद्देश्य लाभ कमाना नहीं बल्कि जोखिम को शून्य करना है।

2. सट्टेबाजी (**Speculation**):

- विनिमय दर में होने वाले परिवर्तनों का पूर्व अनुमान लगाकर जानबूझकर जोखिम उठाना और **सट्टा लाभ (Profit)** कमाना।
- सट्टेबाज मुद्रा सस्ती होने पर खरीदते हैं और महंगी होने पर बेचते हैं।

प्रश्न 47: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में 'इष्टतम मुद्रा क्षेत्र' (**Optimum Currency Area - OCA**) का क्या अर्थ है?

उत्तर:

1. **प्रतिपादक:** रॉबर्ट मंडेल (**Robert Mundell** - नोबेल पुरस्कार विजेता)।
2. **अर्थ:** यह भौगोलिक क्षेत्रों का एक ऐसा समूह है जो आपस में एक ही एकल मुद्रा (**Single Currency**) साझा करते हैं या अपनी मुद्राओं के बीच विनिमय दर को पूरी तरह से तय रखते हैं (उदा. यूरोज़ोन)।
3. **सफल OCA की शर्तें:**
 - क्षेत्रों के बीच श्रम और पूंजी की उच्च गतिशीलता।
 - मूल्य और मजदूरी में लचीलापन।
 - एक साझा राजकोषीय हस्तांतरण प्रणाली (**Fiscal Transfer**) का होना।

प्रश्न 48: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में 'अदृश्य मदों' (**Invisible Items**) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:

1. **अर्थ:** अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन की वे सभी सेवाएं जिनका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता और जिन्हें सीमा पार करते समय देखा या छुआ नहीं जा सकता।
2. **प्रमुख उदाहरण:**
 - सेवाएं: बैंकिंग, शिपिंग, बीमा, पर्यटन, और सॉफ्टवेयर सेवाएं।

- निवेश आय: लाभांश (Dividends), ब्याज और लाभ।
 - हस्तांतरण भुगतान: विदेशों से आने वाले धन (Remittances), उपहार, और अनुदान।
3. स्थान: यह भुगतान संतुलन के चालू खाते (Current Account) में दर्ज किए जाते हैं।

प्रश्न 49: 'पर्यावरणीय मानक और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार' (Environmental Standards & Trade) के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

1. मुद्रा: विकसित देश अक्सर कड़े पर्यावरणीय मानकों (Eco-labeling, कार्बन उत्सर्जन) का हवाला देकर विकासशील देशों के सामान पर प्रतिबंध लगा देते हैं।
2. विकासशील देशों का तर्क: इसे 'ग्रीन प्रोटेक्शनिज्म' (Green Protectionism) कहा जाता है, जो वास्तव में गैर-प्रशुल्क बाधा का काम करता है। विकासशील देशों का मानना है कि उनकी वर्तमान आर्थिक स्थिति कड़े पश्चिमी मानकों को वहन नहीं कर सकती।
3. WTO का रुख: WTO पर्यावरण संरक्षण का समर्थन करता है लेकिन यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि इन नियमों का उपयोग व्यापार में भेदभाव करने के लिए न किया जाए।

प्रश्न 50: भारत के भुगतान संतुलन (India's Balance of Payments) की मुख्य विशेषताओं और चुनौतियों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:

1. संरचनात्मक विशेषताएं:
 - व्यापार खाते में लगातार घाटा (Trade Deficit): कच्चे तेल, सोने और इलेक्ट्रॉनिक्स के भारी आयात के कारण भारत का दृश्य व्यापार हमेशा घाटे में रहता है।
 - अदृश्य खाते में अधिशेष (Services Surplus): सॉफ्टवेयर निर्यात (IT Services) और विदेशी प्रेषण (Remittances) में भारत का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहता है जो व्यापार घाटे की भरपाई में मदद करता है।
2. पूंजी खाते पर निर्भरता: भारत अपने चालू खाते के घाटे (CAD) को भरने के लिए एफडीआई (FDI) और एफपीआई (FPI) जैसे पूंजी प्रवाह पर निर्भर रहता है।
3. प्रमुख चुनौतियां:

- अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव।
- वैश्विक मंदी के कारण निर्यात में सुस्ती।
- विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव और रुपये की विनिमय दर में गिरावट।